शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत की स्थायी सदस्यता का दावा

रजनी अरोड़ा
प्रवक्ता (राजनीति विज्ञान विभाग)
माता हरकी देवी महिला महाविद्यालय
औढां, सिरसा, हरियाणा, भारत

शोध संक्षेप

द्वितीय महायुद्ध के परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्र संघ अस्तित्व में आया। इसका उदेश्य विश्व में शांति व सुरक्षा स्थापित करना व युद्ध-रहित विश्व का निर्माण करना है। इन्हीं उद्देश्यों को पूरा करने में भारत ने हमेशा संयुक्त राष्ट्र संघ का सहयोग किया है। भारत ने शांति स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। इसे ध्यान में रखते हुए भारत सहित दुनिया के अन्य देशों ने भारत को संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा में स्थायी सदस्यता देने की हिमायत की है। प्रस्तुत शोध पत्र में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में भारत की स्थायी सदस्यता पर विचार किया गया है।

भूमिका

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद दुनिया में शांति, सद्भाव और भाईचारा स्थापित करने के लिए दुनिया के देशों ने मिलकर संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन किया। शीत युद्ध के दौरान दुनिया दो धुर्वों में विभाजित हो गयी, तब संयुक्त राष्ट्र संघ ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। उस समय अनेक समस्याओं को चर्चा के माध्यम से हल किया गया। ऐसे अनेक अवसर आये जब युद्ध जैसे हालात निर्मित हुए, परन्तु सकारात्मक पहल से उन्हें रोका गया। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद दुनिया ने वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रवेश किया। इसने पूरी दुनिया के देशों की अर्थव्यवस्था को गहराई तक प्रभावित किया। एक ओर विकास के कीर्तिमान स्थापित हुए तो दूसरी ओर विध्वंसक गतिविधियों में वैश्विक स्तर पर वृद्धि हुई। इसने पूरी दुनिया के देशों को चिंता में डाल दिया है। भारत ने पिछले सालों में युद्ध जैसी स्थितियों को बहुत ज्यादा सहन किया है। भारत हमेशा से विश्व शांति का पक्षधर रहा है। समस्याओं के शांतिपूर्ण हल में उसका सदैव विश्वास रहा है।

सुरक्षा परिषद् में भारत की सदस्यता

वर्तमान में बदलते अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में सुरक्षा परिषद का विस्तार एक अनिवार्य आवश्यकता है। लगभग 150 देशों के प्रतिनिधियों ने सुरक्षा परिषद के पक्ष में मतदान दिया। ऐसे में सुरक्षा परिषद को प्रभावी व सुदृढ बनाना अत्यंत अनिवार्य है। स्थायी व अस्थायी स्दस्यों की संख्या बढाना अत्यंत अनिवार्य है। ग्रुप 4 में इस बात को बार-बार दोहराया गया है कि सुरक्षा परिषद का विस्तार किया जाना अत्यंत आवश्यक है। इसमें 15 स्थायी सदस्यों की जगह 25 सदस्यों की बात कही गई और यह भी कहा गया कि अधिकतर देश एशिया और अफ्रीका से लिए जाने चाहिए। ग्रुप 4 के चारों देश संयुक्त राष्ट्र की स्थायी सदस्यता के लिए एक-दूसरे का समर्थन करते है। भारत की यात्रा पर आए अमेरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने 26 जनवरी 2016 को गणतंत्र दिवस के मौके पर

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारत को सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता का जोरदार समर्थन किया। अमेरिका के बाद रूस ने भी कहा है कि भारत को सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता मिलनी चाहिए। रूस के विदेश मंत्री ने कहा कि सुरक्षा परिषद के सीमित विस्तार की आवश्यकता है और उसे ज्यादा भारी भरकम बनाने की आवश्यकता नही है। इसलिए हम केवल ब्राजील और भारत का ही समर्थन करेंगे और भारत स्थायी सदस्यता का प्रबल दावेदार है। भारत का दावा निम्न आाधारों पर मजबूत है :

विश्व शांति स्थापित करने में भारत सदैव ही प्रयासरत रहा है। भारत की विदेश नीति विश्व में शांति स्थापित करने की वकालत करती है। पिछले 70 वर्षो के इतिहास में भारत ने कभी किसी भी राष्ट्र पर आक्रमण नहीं किया, जबकि भारत पर किसी राष्ट्र ने आक्रमण किया तो भारत ने सदैव शांति का रास्ता ही अपनाया। विश्व में कहीं भी आतंकवाद या मानवाधिकारों का हनन हो रहा हो तो भारत ने सदैव ही विरोध किया। सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनने के बाद तो भारत के शांति स्थापित करने के प्रयासों में और भी तेजी आएगी। विश्व में ऐसे बहुत से संकट आए जब भारत ने संयुक्त राष्ट्र के आहवान पर अपनी शांति सेना भेजी है। चाहे कोरिया संकट हो, कांगो संकट हो, सोमालिया या रवांडा भारत ने शान्ति स्थापित करने में सराहनीय भूमिका निभाई है। संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना संबंधी 14 मिशन में से 7 मिशन में भारतीय सशस्त्र बल भाग ले रहा है। 1950 के दशक से लेकर अब तक विश्व शांति के प्रयासों में भारत अब तक 123 जवानों की जान की बाजी लगा चुका है। ऐसे में भारत की स्थायी सदस्यता का पक्ष अधिक मजबूत होता है।

भारत की तेजी से बढती अर्थव्यवस्था भी भारत की स्थायी सदस्यता का आधार है। आज भारत विश्व की चौथी बडी अर्थव्यवस्था है। कला, विज्ञान, कृषि में भारत ने अपना परचम लहराया है। विश्व के लिए भारत एक बहुत बडा बाजार बन चुका है। अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में भारत के पास असीम संभावनाएं हैं। आर्थिक क्षेत्र में भारत बडी तेजी से प्रगति कर रहा है। इसलिए भारत को सुरक्षा परिषद् में स्थायी सदस्यता दी जानी चाहिए ताकि विकसित देशों की मनमानी को रोका जा सके।

भारत की विशाल जनसंख्या भी स्थायी सदस्यता का दावा मजबूत करती है। विश्व में जनसंख्या के मामले में भारत चीन के बाद दूसरे नंबर पर आता है। इसलिए भारत की भूमिका को अनदेखा नहीं किया जा सकता। भारत की जनता विश्व बंधुत्व की भावना में विश्वास करती है। भारत के लोगों ने विश्व में अपनी पहचान बनाई है। विश्व के प्रत्येक देश को भारत ने सफल इंजीनियर, डाक्टर व तकनीशियन दिए हैं। सांस्कृतिक बहुलता भारत की विशेषता है। इसलिए भारत को सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

भारत निशस्त्रीकरण का प्रबल समर्थक रहा है। महासभा में जब निशस्त्रीकरण का प्रस्ताव रखा तो भारत ने इसका पूर्ण समर्थन किया। 1963 की आंशिक परीक्षण संधि पर भारत ने हस्ताक्षर किए हैं, लेकिन महाशक्तियां परमाणु परीक्षणों को नहीं रोक सकीं। बाद में आयरलैंड व भारत ने शस्त्र संपन्न राष्ट्रों के विस्तार को रोकने हेतु एक प्रस्ताव रखा, जिसे बाद में 1968 की संधि के रूप में रखा गया। यह संधि परमाणु संपन्न राष्ट्रों के विस्तार पर कोई रोक नहीं थी, बल्कि गैर परमाणु संपन्न राष्ट्रों पर प्रतिबंध था। अतः

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारत ने इस संधि को भेदभावपूर्ण माना व हस्ताक्षर करने से मना कर दिया। यही संधि बाद में सी.टी.बी.टी. के रूप में सामने आई। भारत ने इस संधि पर भी हस्ताक्षर नहीं किए क्योंकि इस संधि में भी परमाणु संपन्न राष्ट्रों के परमाणू परीक्षणों पर रोक नहीं थी। अतः कुल मिलाकर भारत भेदभावपूर्ण संधि का पक्षधर नहीं है बल्कि निशस्त्रीकरण का पक्षधर है। वह अस्त्र-शस्त्र का समूल नाश चाहता है। इसलिए भारत स्थायी सदस्य बनने के पूर्ण योग्य है।

संयुक्त राष्ट्र संघ का चार्टर आतंकवाद को विश्व के लिए गंभीर चुनौती मानता है। भारत सदैव संयुक्त राष्ट्र के चार्टर में विश्वास करता आया है और सदैव से ही आतंकवाद को विश्व के लिए खतरा मानता आया है। भारत ने अनेक बार संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिवेशन में आतंकवाद के मुद्दे को प्रभावी ढंग से उठाया है। अमेरिका जैसी शक्तियां भी इस मुहिम में भारत का समर्घन कर रहीं है। ऐसे में सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत का पक्ष अधिक मजबूत है।

संयुक्त राष्ट्र के गठन से लेकर अब तक भारत की भागीदारी हमेशा रही है। 1954 में भारत की विजयलक्ष्मी पंडित महासभा की अध्यक्ष डा नगेन्द्र सिंह दो बार अंतर्राष्ट्रीय न्यायलय के न्यायाधीश रह चुके हैं। भारत सुरक्षा परिषद का अस्थायी सदस्य भी रह चुका है। कोरिया समस्या के लिए गठित आयोग के अध्यक्ष के.वी.मेनन भारत के ही थे। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा विश्व में संचालित किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में भारत ने जिम्मेदारी वहन की है। यूनीसेफ में भी भारत ने अपना योगदान दिया है।

भारत की पहल पर ही दुनिया में रंगभेद के खिलाफ आवाज बुलंद हुई। दक्षिण अफ्रिका की गोरी सरकार से भारत ने अपने सम्बन्ध विच्छेद किये। भारत के सहयोग से संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1971 को जातिवाद और रंगभेद की समाप्ति का वर्ष घोषित किया। विश्व कल्याण को देखते हुए भारत की सुरक्षा परिषद् में स्थायी सदस्यता का दावा अधिक मजबूत हो जाता है।

भारत विश्व का सबसे बडा लोकतांत्रिक देश है। शांति व सुरक्षा जैसे उपायों द्वारा भारत ने विश्व में अपनी एक अलग ही पहचान बनाई है। स्वतंत्रता, समानता व मानव कल्याण जैसे कार्यों में भारत ने सदैव ही संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थन किया है। अगर भारत को सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता मिलती है तो भारत न केवल विवादों का निपटारा बल्कि विकासशील देशों में व्याप्त समस्याओं गरीबी, बेरोजगारी, निरक्षरता, आतंकवाद जैसी समस्याओं को खत्म करने में अपना और भी योगदान दे सकता है।

सुझाव

1 विश्व की महाशक्तियाँ निजी स्वार्थों को भूलकर विश्व कल्याण के लिए आगे आयें और भारत को समर्थन दें।

2 महाशक्तियां वीटो पॉवर का दुरूपयोग न करें। सुरक्षा परिषद को शांति सुरक्षा संबंधी कार्य करने दें।

3 संयुक्त राष्ट्र संघ को महाशक्तियों का अखाड़ा न बनाकर उसे विश्व के लोकमत का मंच बना रहने दें।

4 विकसित राष्ट्रों को चाहिए कि वे विकासशील राष्ट्रों को सहायता दें ताकि वे विश्व की मुख्य धारा में आ सकें। सबसे बडा योगदान यही होगा कि वे सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत को समर्थन दे।

5 अगर संयुक्त राष्ट्र को शक्तिशाली बनाना है तो सुरक्षा परिषद का विस्तार करना होगा। भारत

जैसे शांतिप्रिय राष्ट्र को स्थायी सदस्यता देनी चाहिए।

निष्कर्ष

अंत में हम यही कह सकते हैं कि भारत की विदेश नीति शांति व सुरक्षा की रही है। जब-जब विश्व में गंभीर संकट आए हैं भारत ने चतुराई और बुद्धिमत्ता से उन संकटों का सामना किया है। हर कल्याणकारी कार्यों में संयुक्त राष्ट्र संघ का सहयोग किया है। विश्व समुदाय आज भारत के साथ खडा है और भारत को सुरक्षा परिषद की सदस्यता दिलाने के लिए भारत का समर्थन कर रहा है।

संदर्भ सूची

1 फडिया बी.एल., अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2010

2 राय गुलशन, वर्मा सोमनाथ, कुमार सुरेश, अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, ज्योति बुक डिपो, 2017

3 कुमार रंजीत, हिन्दी न्यूज इण्डिया, 18 अगस्त 2015, नई दिल्ली